इण्डियन
थिऑसफिस्ट

जनवरी 2024	खण्ड 122	अंक 1

विषयवस्तु

अध्यक्ष, भारतीय सेक्शन के सम्भाशण के अनुसार
भारतीय सेक्शन की स्थिति 3—32

समाचार और टिप्पणियां 33—34

सम्पादक प्रदीप एच गोहिल
अनुवादक श्याम सिंह गौतम

थिऑसफिकल सोसायटी ऐसे शिक्षार्थियों से मिल कर बनी है जो संसार के किसी भी धर्म से संबंध रखते हैं या फिर संसार के किसी भी धर्म से सम्बन्ध नहीं रखते हैं, और जो सोसायटी के उद्‌देश्यों के अनुमोदन के कारण सोसायटी से जुड़े हुये हैं, धार्मिक विरोधों को दूर करने और अच्छी मानसिकता वाले लोगों को एकत्रित करते हैं जिनकी धार्मिक धारणा कुछ भी क्यों न हो, या जिनकी आकांक्षा धार्मिक सत्य को जानने, और अपने अध्ययन के परिणामों को दूसरों से साझा करना चाहते हैं। उनके एकत्व का बंधन कोई समान विश्वास का व्यवसाय नहीं है बल्कि समान खोज और सत्य तक पहुंचने की आकांक्षा है। वे मानते हैं कि सत्य को अध्ययन, मनन, जीवन की पवित्रता, उच्च आदर्शों के प्रति उनकी श्रद्धा, और जो सत्य को ऐसा पारितोषिक मानते हैं जिसके लिये प्रयास किया जाना चाहिये, न कि ऐसी रूढ़ि जो अधिकार से लागू की जाये। वे मानते हैं कि विश्वास व्यक्तिगत अध्ययन और स्फुरणा का परिणाम है न कि उससे सम्बन्धित किसी वस्तु से, और उसका आधार ज्ञान होना चाहिये न कि मान्यता। वे सभी के प्रति सहिष्णु होते हैं, यहां तक कि असहिष्णु के प्रति भी, किसी विशेषाधिकार के रूप में नहीं बल्कि कर्तव्य के रूप में और वे अज्ञान को मिटाना चाहते हैं, उन्हें दंड दे कर नहीं। वे सभी धर्मों को दैवी प्रज्ञान की अभिव्यक्ति के रूप में मानते हैं, और इनका तिरस्कार और धर्म परिवर्तन को नहीं उनके अध्ययन को वरीयता देते हैं। शांति के प्रति वे सतर्क हैं, जैसे सत्य उनका लक्ष्य है।

थिऑसफी ऐसे सत्यों का संग्रह है जो सभी धर्मों का आधार बनाती है, और कोई इस पर अपने व्यक्तिगत अधिकार का दावा नहीं कर सकता है। यह ऐसा दर्शन प्रस्तुत करती है जो जीवन की समझ प्रदान करता है और जो न्याय और प्रेम को दर्शाता है, जो विकास का मार्गदर्शन करता है। यह मृत्यु को उसके उचित स्थान पर रखती है, जो अनन्त जीवनों में पुनरावृत्ति करने वाली क्रिया है, और एक अधिक पूर्ण और अधिक प्रकाशमान अस्तित्व है, यह संसार में अध्यात्म—विज्ञान को पुनर्प्रतिष्ठित करती है, मनुष्य को शिक्षा देती है कि वह स्वयं आत्मा है और मन और शरीर उसके सेवक हैं। यह ग्रन्थों और धार्मिक सिद्धांतों के गूढ़ अर्थों को प्रकाशित करती है और इस प्रकार मेधापूर्वक उनकी पुष्टि करती है क्यों कि वे स्फुरणा की दृष्टि में सदैव उचित हैं।

थिऑसफिकल सोसायटी के सदस्य इन सत्यों का अध्ययन करते हैं और थिऑसफिस्ट उन्हें अपने जीवन में उतारते हैं। ऐसा प्रत्येक व्यक्ति जो अध्ययन करना चाहता है, सहिष्णु होना चाहता है, जिसका लक्ष्य उच्च है और पूरी शक्ति से कार्य करना चाहता है, उसका सदस्य के रूप में स्वागत है, और उसका सच्चा थिऑसफिस्ट बन जाना उसी पर निर्भर करता है।

अध्यक्ष, भारतीय सेक्शन के सम्भाषण के अनुसार भारतीय सेक्शन की स्थिति

1. भारतीय सेक्शन की गतिविधियों पर विहंगम दृष्टि

मुझे यह बताते हुये अत्यंत हर्ष है कि अन्य वर्शों की भांति इस वर्ष भी भारतीय सेक्शन की स्थिति बहुत स्वस्थ है। मैं थिऑसफिकल वर्ष 1 अक्टूबर 2022 से 30 सितम्बर 2023 तक भरतीय सेक्शन की गतिविधियों पर विहंगम दृष्टि प्रस्तुत कर रहा हूं:–

इस वर्ष की सबसे महान उपलब्धि यह थी इस वर्ष भी भारतीय सेक्शन की सदस्यता में दूसरी बार महान वृद्धि हुयी है जो 11, 549 से बढ़ कर 12, 231 हो गयी। यह 682 सदस्यों की वृद्धि थी, जो 5.9 प्रतिशत थी। इसे पिछले वर्ष की वृद्धि 2,510 के प्रकाश में देखा जाना चाहिये। यह प्रदर्शित करता है कि प्रवेश शुल्क और वार्षिक शुल्क समाप्त करनें के कदम नें वास्तव में भारतीय सेक्शन की सदस्यता बढ़ानें में भारी योगदान दिया है। यह इस सत्य के साथ है कि 1983 सदस्यों की सदस्यता इसलिये समाप्त करनी पड़ी है क्योंकि वे अपनी सदस्यता समय से नवीनीकृत नहीं कर पाये हैं। इस वर्ष हमनें सदस्यता का नवीनीकरण बहुत कड़ाई से किया है क्योंकि सदस्यता का नवीनी करण तभी किया है जब उन्होंनें यह संकेत किया है कि वे अपनी सदस्यता नवीनीकृत करना चाहते हैं, इंडियन थिऑसफिस्ट पत्रिका की भाषा जिसमें वे प्राप्त करना चाहते हैं, के बारे में अपना विकल्प दे दिया हो और स्वयं हस्ताक्षर किया हो। भारतीय सेक्शन में यह सुनिश्चत करनें के लिये यह कदम उठाया है कि अब कोई प्रेत सदस्य न रह जाये जैसा कि पहले के वर्षों तक होता रहा है। यह बहुत ही उचित नियंत्रण सिद्ध हुआ है। मैं सभी फेडरेशनों और लॉजों के सचिवों और अध्यक्षों को धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंनें 12,231 हस्ताक्षरित शीट्स सदस्यों के डिप्लोमा संख्या के साथ भेजे हैं। भारतीय सेक्शन नें 1 सितम्बर तक नवीनीकृत न हुये सदस्यों की लॉजों के अनुसार सूची 15 सितम्बर तक और 23 सितम्बर 2023 तक भेज कर उनके कार्यों को आसान कर दिया था। लॉज सेक्रेटरियों को इतना करना था कि पत्रिका की भाषा के बारे में विकल्प लेकर उनके हस्ताक्षर करवा कर भारतीय सेक्शन के ईमेल

'renewalindsememb@gmail.com' को भेज दें। एक प्रशासनिक निर्देश के रूप में हम नें निर्णय लिया है कि 1 अक्टूबर के बाद बने नये सदस्यों के लिये सदस्य बने रहनें के लिये 1 वर्श के लिये यह नवीनीकरण अनिवार्य नहीं है।

1 अक्टूबर 2021 को 1188 आजीवन सदस्य थे जब सेक्शन का सदस्यता शुल्क समाप्त करनें का निर्णय लागू हुआ। 1 अक्टूबर 2022 को 745 आजीवन सदस्य इसलिये ड्राप कर दिये गये क्योंकि वे भारतीय सेक्शन से संपर्क नहीं बना सके थे और अपनी आजीवन सदस्यता को नवीनीकृत नहीं कर पाये थे। इसका परिणाम यह हुआ कि जो 745 ड्राप किये गये थे उनमें से 173 सदस्य फिर से पुनर्जीवित कर दिये गये थे। इनके अतिरिक्त 32 आजीवन सदस्य शांतिलीन हो गये और 30 आजीवन सदस्यों की सदस्यता नवीनीकृत न करवानें के कारण ड्राप हो गयी। इस प्रकार वर्तमान में 554 आजीवन सदस्य हैं।

इस श्रृंखला में दूसरे वर्ष्ां भी नये सदस्यों का नया रिकार्ड है। इस वर्ष 2804 नये लोग सदस्य हुये हैं जबकि पिछले वर्ष 2258 नये सदस्य बनें हैं, जो कि अनेक दशकों के नये सदस्यों से सब से अधिक है। इसी लिये हम कहते हैं कि नये सदस्यों का विकास वर्ष 2022–23 मे सब से अधिक रहा है। इस वर्ष भारतीय सेक्शन नें सभी फेडरेशनों को रु 75/– प्रति सदस्य की दर से 1 अक्टूबर 2022 तक प्रतिपूर्ति कर दी गयी है। युवा सदस्यों की संख्या में वृद्धि का लक्ष्य पिछले वर्ष पूरा हुआ था और इस वर्ष युवा सदस्यों के प्रतिशत में वृद्धि हुयी है।

ऑन लाइन व्याख्यानों की ओर रुझान जो कुछ वर्षों पहले करोना के कारण प्रारम्भ हुआ था, अभी भी जारी है। बांबे फेडरेशन के बन्धु तरल मुंशी जैसे कुछ सदस्य हैं जो दो या तीन वक्ताओं के माध्यम से अंग्रेजी, हिन्दी ओर किसी क्षेत्रीय भाषा में वक्तव्य आयोजित करते हैं जो प्रत्येक मंगलवार को 1 घण्टे के लिये 'त्रिवेणी ट्यूजडे लेक्चर्स' के नाम से प्रसारित किये जाते हैं। बन्धु शिखर अग्निहोत्री और बहन कैटलीना गम्भीर थिऑसफिकल विशयों पर नियमित रूप से अनेक कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। बन्धु प्रदीप महापात्रा नें बन्धु शिखर अग्निहोत्री के साथ मिल कर प्रारम्भ में इस प्रकार के कार्यक्रमों में अग्रणी बन गये। यह अभी भी अनेक प्रकार के कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे हैं। इनमें से 'मास्टर्स लेटर्स' एक प्रिय विषय है। बन्धु यू.एस. पाण्डेय औसतन दो व्याख्यान प्रति

सप्ताह 'ऑन लाइन' या 'इन परसन' देते हैं। बहन विभा सक्सेना, बन्धु एन.सी. कृष्णा, बन्धु प्रदीप महापात्रा बहन स्मिता प्रांग्या पात्रो, बन्धु सी.ए. शिंदे, बन्धु हर्षवर्धन शेठ, और अन्य अनेक सदस्य नियमित रूप से बहुत अच्छे वक्तव्य प्रस्तुत करते हैं। मेरा विश्वास है कि युवा के लिये दिया गया जोर युवा सदस्यों की संख्या और गुणवत्ता में बढ़त के लिये सामान्य रूप से उत्तरदायी है।

इस वर्ष अध्यक्ष महोदय नें बन्धु वी. नारायणन, भारतीय सेक्शन के कोशाध्यक्ष को तीसरे ''डा0 बर्नियर , वर्ष का थिऑसफिस्ट'' एवार्ड के लिये एक्जीक्यूटिव कमेटी को अनुशंसित किया था। वे इस एवार्ड को 1 जनवरी 2024 को अडयार में आयोजित भारतीय सेक्शन के अधिवेशन के प्रारम्भ में प्राप्त करेंगे। उन्होंनें भारतीय सेक्शन के कोशाध्यक्ष के रूप में जनवरी 2018 से अब तक भारी योगदान दिया है और भारतीय सेक्शन को उस स्थिति से जिसमें अंतर्राष्टीय टी.एस. के प्रति 50 लाख की देनदारी थी से वर्तमान स्थिति जिसमें 2 करोड़ प्रति वर्ष सरप्लस के साथ 10 करोड़ के वित्त रिजर्व में ले आये हैं। उन्होंनें धन एकत्रित करनें के अनेक उपाय प्रस्तावित किये हैं और उन्हें युक्ति पूर्वक बचा कर अच्छे ब्याज से अतिरिक्त आय विकसित करवायी है। इसके अतिरिक्त उन्होंनें कठिन परिश्रम से 'इन चार्ज अध्यक्ष' के रूप में भूमिका निभा कर यह प्रदर्शित कर दिया है कि अध्यक्ष की अनुपस्थिति में भी संगठन की गतिविधियां चलती रहती हैं। उन्होंनें पूरे वर्ष यहां रह कर वाराणसी के अत्यधिक गर्म और ठंढे मौसमों को सहन किया है। एक्जीक्यूटिव कमेटी के सचिव और भारतीय सेक्शन की सम्पत्ति समिति के अध्यक्ष के रूप में भी योगदान दे कर यह सिद्ध किया है कि उन्होंनें इस एवार्ड को निश्चित रूप से अर्जित किया है।

इस वर्ष का एक अन्य उच्च बिन्दु यह योजना और इसका एक्जीक्यूटिव कमेटी में प्रस्ताव रहा है कि 2 करोड़ की लागत से भारतीय सेक्शन के 100 सदस्यों को थिऑसफिकल सोसाइटी की 12वीं विश्व कांग्रेस में प्रायोजित किया जाये, जो वैंकुअर, कनाडा में 23 जुलाई से 27 जुलाई 2025 की अवधि में आयोजित है। संयोगवश भारतीय सेक्शन के काउन्सिल सदस्यों नें एक रिजोल्यूशन भी पारित किया (40 सहमति, 3 विरोध और 5 उदासीन) कि इस सेक्शन के लगभग 100 सदस्यों के लिये यह एक महान अवसर होगा कि वे विदेशी भूमि के विश्वमंच पर अपने क्षितिज को विस्तार दे सकें। अन्य देशों के थिऑसफिस्टों के साथ विचार साझा करनें से निश्चित रूप से कुछ क्षेत्रों में

थिऑसफी के प्रसार में सहायक होगा। एक आठ सदस्यीय कमेटी का गठन किया जायेगा जो भारतीय सेक्शन, टी.एस. के सब से अधिक योग्य सदस्यों का मानक और मेरिट के आधार पर चयन करेगा।

हमनें ''द इंडियन थिआसफिस्ट'' के, वर्श के 12 मासिक अंक अंग्रेजी और हिन्दी में प्रकाशित किये हैं। पूर्व महासचिव बन्धु एस. सुन्दरम्, शत प्रतिशत स्वस्थ न रहते हुये भी इस उच्चतम स्तर की पत्रिका, जिसमें थिऑसफी के बारे में सीखने के लिये बहुत होता है, के लिये प्रतिदिन अपना मूल्यवान समय देते हैं। हम सभी को उनके अच्छे स्वास्थ्य के लिये शुभ कामनायें और प्रार्थनायें करना चाहिये कि वे इस कार्य को करनें के लिये आने वाले अनेक वर्षों तक सक्षम रहें। इसी प्रकार बन्धु श्याम सिंह गौतम, लगातार अंग्रेजी संस्करण का हिन्दी में पढ़नें के इच्छुक सदस्यों के लिये हिन्दी में अनुवाद बहुत सीमित समयावधि में करते रहे हैं। प्रत्येक महीनें यह करना आसान कार्य नहीं है!

इस वर्ष का एक और उच्च बिन्दु यह था कि भारत सरकार नें कैम्पस की 17 एकड़ भूमि में से एक एकड़ भूमि वाराणसी कैन्ट रेलवे स्टेशन से रथयात्रा क्रॉसिंग होते हुये काशी विश्वनाथ मंदिर के पास तक एक रोप वे बनानें हेतु अधिग्रहीत करनें का आदेश दिया है। सरकार द्वारा एक अच्छी रकम जो बाजार दर से दो गुनी है, दी गयी है। किन्तु मैं दुखी था कि बेसैंट थिऑसफिकल विद्यालय के खेल के मैदान का एक भाग, ऐम्फीथियेटर, और जुड़े हुये भगवान शिव और भारत समाज के मंदिर, सरकार के हाथ में चले गये हैं। हमारा प्रतिरोध प्रधिकारियों में बहुत आगे तक नहीं जा सका क्योंकि अधिकारी गण हमारे जनप्रिय प्रधान मंत्री मि0 मोदी की प्रिय योजना से आदेशित थे। हमें दूसरा मंदिर बनवानें के लिये क्षतिपूर्ति भी हुयी है जिससे मंदिर और कैंपस में दूसरे ऐम्फीथियेटर का निर्माण प्रारम्भ हो चुका है।

भारतीय सेक्शन द्वारा वाराणसी विकास प्राधिकरण के प्रति दायर किये गये कोर्ट केस जिसमें गुरुबाग रोड को चौड़ा किये जानें के लिये अधिग्रहीत भूमि के मुवावजे के रूप में 4 करोड़ रुपयों की मांग की गयी थी, अभी भी इलाहाबाद हाईकोर्ट में चल रहा है। हमारा एडवोकेट नें हमें आश्वासन दिया है कि हम केस को जीतेंगे और कुछ समय बाद हमें मुवायजा और उसका उसका ब्याज भी मिलेगा। वाराणसी की सदर तहसील में एस.डी.एम. कार्यालय में चल रहे, एक भूमि का उपेन्द्रनाथ बसु से भारतीय सेक्शन के नाम खेतौनी में दाखिल

खारिज करवानें के लिये है, वह इस समय सुनवाई पर है और साक्ष्य प्रस्तुत किये जा रहे हैं। यह हमारे लिये महत्वपूर्ण है क्योंकि भूमि सोसाइटी के महासचिव रहे मि0 उपेन्द्रनाथ बसु के नाम तब से है जब ऐनी बेसैंट नें 1907 में इसे भारतीय सेक्शन को दे दिया था। दुर्भाग्यवश मुख्यालय के किसी प्रशासनिक अधिकारी नें एस.डी.एम. के न्यायालय से इसके नाम परिवर्तित करवानें का गम्भीर प्रयास नहीं किया था। एक और व्यतिरेक यह है कि उपेन्द्रनाथ बासु के भाई का प्रपौत्र हमारी उस भूमि को वाराणसी के एक बिल्डर को बेंच दिया है जिसके लिये उसनें लगभग एक करोड़ रुपये बासु को भुगतान, सरकारी टैक्स और वकील आदि के लिये खर्च किये हैं। कोई भी आश्चर्य करेगा कि किस प्रकार जिस भूमि पर पंजीकृत विक्रय अभिलेख के साथ 116 वर्षों से हमारा अनवरत कब्जा है उसमें किसी अन्य के स्वामित्व का दावा कैसे हो सकता है। हम में से कुछ लोगों को मारने की धमकियां मिली हैं और मेरे प्रति वाराणसी के न्यायालय में दो क्रिमिनल केस लगाये गये हैं। इन सब के होते हुये भी मैं सुनिश्चित हूं कि हम केस जीतेंगें।

2. भारतीय सेक्शन अधिवेशन

भारतीय सेक्शन के आयोजन में 28 से 30 अक्टूबर 2022 तक तीन दिवसीय भारतीय सेक्शन का 131वां अधिवेशन भारतीय सेक्शन मुख्यालय, टी. एस. वाराणसी के राधा बर्नियर ऐम्फीथियेटर में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का प्रारम्भ सर्व धर्म प्रार्थना और विश्व प्रार्थना से 28 अक्टूबर को हुआ।

बन्धु प्रदीप गोहिल, अध्यक्ष, भारतीय सेक्शन नें स्वागत भाषण दिया। उन्होंनें भारतीय सेक्शन की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की और सूचित किया कि पिछले वर्ष से द इण्डियन थिऑसफिस्ट, एक मासिक पत्रिका हिन्दी में भी उपलब्ध है, और चोहान लॉज कानपुर के बन्धु श्याम सिंह गौतम के अंग्रेजी संस्करण का हिन्दी में अनुवाद कम से कम सम्भव समय में करने के लिये उनकी सराहना की। उन्होंनें यह भी घोषित किया कि जो रिजोल्यूशन 2020–21 में पारित हुआ था उसकी दिशा में व्यवहारिक कदम उठाते हुये सदस्यता के लिये प्रवेश शुल्क और वार्षिक शुल्क समाप्त कर दिया गया है। इसके परिणाम स्वरूप टी.एस. की सदस्यता 300 बढ़ कर 11549 पहुंच गयी है। उन्होंनें कार्यक्रम की सफलता के लिये कामना की। इसके पश्चात विभन्न फेडरेशनों से आये प्रतिनिधियों नें शुभ कामनायें प्रस्तुत कीं। बन्धु वी. नारायणन नें भारतीय सेक्शन

के कोशाध्यक्ष की रिपोर्ट पढ़ी। इस अवसर पर बन्धु यू.एस. पाण्डे को 2021–22 के 'वर्श के थिऑसफिस्ट' के द्वितीय राधा बर्नियर एवार्ड से विभूशित किया गया।

उसके पश्चात बहन दीपा पाधी, अन्तरराष्ट्रीय उपाध्यक्ष, टी.एस., मुख्य अतिथि नें कीनोट भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंनें संकेत किया कि युद्ध, आतंकवाद, ग्लोबल वार्मिंग, जेंडर डिस्पैरिटी, और नश्लवाद आधुनिक संसार की बड़ी समस्यायें हैं। भगवद्गीता, ऋगवेद और उपनिशदों के उद्धरण देते हुये कि यूनीवर्सल बन्धुत्व (वसुधैव कुटुम्बकम्) सनातन धर्म के मूल का निर्माण करता है। उन्होंनें आगे कहा कि कोविड 19 नें हमें जो पाठ सिखाये है उनमें से एक है कि हम अपने को सुरक्षित नहीं रख सकते हैं जब तक कि संसार के किसी कोनें में कोई अन्य व्यक्ति कष्ट में है। यह हमारी आपस में अंतर्सम्बन्धित होनें का सटीक उदाहरण था। उन्होनें विश्वबन्धुत्व के लिये भईचारा, करुणा, नम्रता, प्रेम और शांन्ति को विकसित करनें पर जोर दिया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता बन्धु दिव्यार्थ दुबे नें की। बन्धु आदि केशव शास्त्री नें 'बन्धुत्व का सार' विषय पर वक्तव्य देते हुये ईशा उपनिशद को उद्धरित करते हुये कहा कि पूरा विश्व ईश्वर के द्वारा आच्छादित है और वह पूरे विश्व में रहता है। आदि शंकराचार्य के शब्द उद्धरित करते हुये उन्होंनें कहा कि उन्होंनें केवल यह ही नहीं कहा था कि 'अहम् ब्रह्मास्मि' बल्कि यह भी कहा, 'तत् त्वमपि'। अतः व्यक्ति को सभी में एकत्व का आभास करना चाहिये। उन्होंनें महाचोहानों द्वारा कही गयी 15 और नियमों की चर्चा की जैसे 'अभिलाशाओं को मार दो, कामनाओं को मार दो, अलगत्व को मार दो, संवेदों की कामना त्याग दो, वृद्धि की कामना त्याग दो आदि' तब उन्होंनें उडिया के सन्त कवि भीमो भॉई को उद्धरित किया, 'मीतु मोरा जीबन'।

उसके पश्चात बन्धु शिवकुमार पाण्डेय, सचिव उत्तर प्रदेश एवम् उत्तराखण्ड फेडरेशन नें 'संघर्ष का मूल कारण स्वार्थ है' विषय पर वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि थिऑसफिस्ट सभी धर्मों पर विश्वास करते हैं और थिऑसफी का प्रज्ञान राष्ट्रों की सीमाओं के ऊपर है। उन्होंनें कहा कि विश्लेशण और विवेक की प्रक्रिया मन में सदा चलती रहती है और लोग शांति को बाहर खोजते रहते हैं। हम जो सोचते और प्रतीत करते हैं उसी के परिणाम हैं। हम अलगत्व को मानते हैं, और इसे सामान्य समझते हैं, किन्तु यह हमें अपने प्रयासों

में स्वार्थी बनाता है। भौतिक शरीर के क्रियाविधि का वे उदाहरण देते हैं, कि कोऑपरेशन और कोऑर्डीनेशन पूरी प्रकृति में गहराई से व्याप्त है, और विश्वबन्धुत्व के लिये इसे अपनें स्वयं में भी व्याप्त करनें की आवश्यकता है।

डा0 अजय कुमार राय नें कहा कि विश्वबन्धुत्व हमारे अस्तित्व का सार है। उन्होंने 'मैं' को निकाल देनें पर बल दिया, और करुणा और प्रेम को प्रोन्नत करनें को कहा, जो व्यक्ति को खुशी प्रदान करते हैं। उन्होंनें 'प्रतिक्रियाओं' को न होने देने के लिये चार विधियां बतायीं। यह चार विधियों की एबीसीडी है जिसमें ए–एलर्ट, बी–बाईपास, सी–कूल और डी–डायवर्ट है। (सावधान, उलझाव से बचना, मन शांत रखना और धनात्मकता की ओर मुड़ना)। उन्होंनें आगे बताया कि संघर्ष रोकनें के लिये 'सही कौन है?' के स्थान पर 'सही क्या है?' पर फोकस करना चाहिये। तीसरे सत्र में बन्धु एस. सुन्दरम, भारतीय सेक्शन के पूर्व महासचिव, नें 'रोहित मेहता – उनकी स्मृतियां' विषय पर वार्ता की जिसके पश्चात बन्धु यूएस पांण्डेय नें 'विश्वबन्धुत्व, हमारा धर्म' पर चर्चा की।

बन्धु एन.सी. कृष्णा संध्या सत्र में एक विशेष व्याख्यान दिया जिसका विषय था, 'बन्धुत्व एक सत्य या मिथ्या?' डा0 रचना श्रीवास्तव, प्राचार्य, वसन्त कन्या महाविद्यालय, नें इस सत्र की अध्यक्षता की।

संध्या 7.00 पीएम पर ऐनी बेसैन्ट हाल में 'रिचुअल ऑफ द मिस्टिक स्टार' संचालित किया गया।

29 अक्टूबर के प्रथम सत्र में सत्र की अध्यक्ष बहन मितालिनी महापात्रा नें यूनीवर्सल प्रार्थना का आह्वान किया। उसके पश्चात कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन ऑफ इंण्डिया राजघाट के बन्धु प्रोफेसर पी. कृष्णा नें डा0 राधा बर्नियर स्मृति भाषण प्रस्तुत किया जिसका शीर्षक था, ''द अदर मैन इन योरसेल्फ''। प्रो0 कृष्णा नें 'अदर मैन' के कर्तव्य बताये जो कोई दूसरा नहीं व्यक्ति स्वयं है।

दूसरा सत्र यंग इण्डियन थिऑसफिस्ट्स (वाई.आई.टी.) का था जिसकी अध्यक्ष बहन चन्द्र प्रव भूयन, आसाम फेडरेशन की उपाध्यक्ष थीं। इसके वक्ता थे बहन कृतिका गोयल, प्रयास लॉज, गाजियाबाद, जिसनें ''बन्धुत्व को वास्तविकता बनाना'' विषय पर बोला। पुने लॉज, पुने की बहन मोनिका वकारे नें ''बन्धुत्व के बिना धर्म क्षरित हो जाता है।'' बैंगलोर सिटी लॉज, बैंगलोर के

बन्धु प्रदीप एम.एस. नें ''बिना भेदभाव के बंघुत्व'' विषय पर और आनन्द लॉज, प्रयागराज के बन्धु दर्शन झा नें ''सेल्फ इज विजिबल इन एवेरीथिंग ऐण्ड एवेरीथिंग इज विजिबल इन सेल्फ'' विषय पर बोले।

बन्धु प्रदीप एच. गोहिल, अध्यक्ष भारतीय सेक्शन, टी.एस., वाराणसी, तीसरे सत्र में हुये विशेष व्याख्यान कार्यक्रम के अध्यक्ष थे। डा0 रचना श्रीवास्तव नें महान वक्ता प्रो0 सुधीर कुमार जैन, उप कुल सचिव, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का परिचय प्रस्तुत किया। उनके विषय का शीर्षक था, ''भारतीय विश्वविद्यालय,– चुनौतियां और अवसर''। धन्यवाद प्रस्ताव बहन उमा भट्टाचार्य नें प्रस्तुत किया।

चौथा सत्र थिऑसफिकल ऑर्डर ऑफ सर्विस का कार्यक्रम था, जिसके अध्यक्ष बन्धु के. शिवप्रसाद, राष्ट्रीय निर्देशक, टी.ओ.एस. इण्डिया थे। डा0 दीपा पाधी, अंतर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, टी.एस., सत्र में ''परिवर्तित होते समय में टीओएस के कार्य'' विषय पर एक वक्तव्य दिया। तब बन्धु सत्रजित चक्रोबोर्ती नें ''टीओएस स्कूल एजूकेशन इन वेस्ट बंगाल'' विषय पर बोला।

पांचवें सत्र में एक परिचर्चा हुयी जिसके अध्यक्ष बन्धु राजीव माथुर थे। बन्धु नरसिंह ठाकरिया नें ''विश्वबन्धुत्व को दैनिक जीवन में कैसे प्रयोग करें?'' पर एक सुन्दर चर्चा की। डा0 रचना श्रीवास्तव नें ''विश्वबन्धुत्व और विश्व शांति'' विषय पर और बहन सुव्रलिना मोहन्ती नें ''अलगत्व का भाव अज्ञानता से आता है'' पर चर्चायें कीं।

छठवें सत्र की अध्यक्षता बन्धु पी. रघुराम राव नें की। इस सत्र के वक्ता बन्धु संदीप पाण्डेय नें ''भारतीय संविधान में आधारभूत कर्तव्य'' विषय पर बोलते हुये संविधान के अनुसार भारतीयों के कर्तव्यों के बारे में अवगत कराया।

सातवां सत्र एक सांस्कृतिक कार्यक्रम था जिसे केटीएस, एबीएस, बीटीएस, वीकेआईसी, वीकेएम, ऑफ वाराणसी और प्रयास लॉज, वैशाली, उ0प्र0 नें प्रस्तुत किया। इस प्रकार भारतीय सेक्शन टी.एस. के तीन दिन के 131वें अधिवेशन का 30 अक्टूबर 2022 को समापन हुआ। इसका प्रारम्भ बन्धु सुशील बन्धेर, मंजुला ठक्कर और बहन विधु बेन पटेल के भक्ति गीतों से प्रारम्भ हुआ, जिसके बाद बन्धु तरल मुंशी नें वन एक्ट प्ले प्रस्तुत किया।

अधिवेशन की थीम ''विश्वबंधुत्व – वर्तमान समय की आवश्यकता'' पर

एक प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन हुआ। पेनलिस्ट थे बहन उमा भट्टाचार्या, व्यवस्थापक, वीकेएम, बन्धु यू.एस. पाण्डेय, अध्यक्ष, यूपी और यूके फेडरेशन और हैदराबाद के बन्धु एन.सी. कृष्णा। बहन उमा भट्टाचार्या नें बताया कि वीकेएम की ग्रेजुएट स्तर की और वसन्त कन्या इंटर कॉलेज की छात्राओं के लिये 'थिऑसफी में मूल्य वृद्धि कोर्स' प्रारम्भ हो चुका है। उन्होंनें आगे बताया कि देश के युवाओं को थिआसफी से परिचित करानें के लिये, शीघ्र एक प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ किया जायेगा।

इसके पश्चात एक ओपेन हाउस सत्र प्रारम्भ हुआ जिसके अध्यक्ष बन्धु आदि केशव शास्त्री और माडरेटर बहन विभा सक्सेना थीं। इस सत्र की थीम थी ''थिऑसफिकल सोसाइटी – विश्वबन्धुत्व की अग्रदूत'' इस सत्र के विचार सार यह हैं कि विश्व बन्धुत्व कोई निश्क्रिय वाक्यांश नहीं है किन्तु यह उच्च लोकों में पहले से अस्तित्व में है। यह प्रतीत करते हुये कि हम सब एक हैं, इसे लॉज स्तर पर लाया जाना चाहिये, और यदि हम सब परिवर्तित होंगे तो लॉज का परिवर्तन प्रारम्भ होगा। आत्म परिवर्तन के लिये टीएस के सदस्यों को निष्ठापूर्वक तीन कदम उठानें चाहिये – अध्ययन, ध्यान और सेवा।

समापन सत्र की अध्यक्षता बन्धु प्रदीप एच. गोहिल, अध्यक्ष, भारतीय सेक्शन, टी.एस. नें की। उन्होंनें कहा कि हम आपस में चर्चायें करते हैं, मिलते हैं और साथ में भोजन करते हैं, साथ रहते हैं, साथ खेलते हैं, तब हम अपनें में अपने आस पास बन्धुत्व और शांति भी साझा कर सकते हैं। अनेक सदस्यों ने अधिवेशन में अपने अनुभवों को साझा किया। बन्धु प्रदीप महापात्रा के द्वारा दिये गये धन्यवाद प्रस्ताव के साथ अधिवेशन का समापन हुआ।

इस आयोजन का देश के विभिन्न कोनों से आये 755 प्रतिभागियों नें प्रेक्षण किया जिनमें कर्नाटक, उड़ीशा, आसाम, आंध्र प्रदेश, बिहार, पश्चिमी बंगाल, गुजरात, और यूपी एवम् उत्तराखण्ड आदि के प्रतिभागी थे।

3.चुनाव

दो सदस्य भारतीय सेक्शन के अध्यक्ष पद के प्रतियोगी थे – बन्धु प्रदीप एच. गोहिल और बन्धु एम. एस. रघुनाथ। इस सम्बन्ध में 4 जनवरी 2023 को मतदान हुये थे जिसमें बन्धु प्रदीप एच. गोहिल को 39 वोट और बन्धु एम. एस. रघुनाथ को 9 वोट मिले थे। अतः बन्धु एम. एस. गोहिल अडयार में भारतीय

सेक्शन 2034, 24 और 25 के लिये अध्यक्ष घोशित हुये थे।

3. भारतीय सेक्शन मुख्यालय

डा0 ऐनी बेसैंट का 175वां जन्म दिन 1 अक्टूबर 2022 को मनाया गया। शैक्षिक संस्थाओं के छात्रों और शिक्षकों नें और सेक्शन मुख्यालय के कर्मचारियों और सदस्यों नें उनको श्रद्धांजलियां अर्पित कीं।

वीकेएम पीजी कॉलेज में प्रोग्रेसन ऑफ ऐनी बेसैंट स्पिरिट कमेटी और एन.एस.एस. की वीकेएम की पांच इकाइयों के साथ मिल कर डा0 ऐनी बेसैंट का 175वां जन्म दिन मनाया। प्रातः ऐनी बेसैंट हाल में उनकी प्रतिमा में पुष्प पल्लवों के समर्पण किये गये। बाद में नेशनल सर्विस स्कीम के स्वयंसेवकों नें टी.एस. के ऐनी बेसैंट हाल में श्रद्धांजलियां अर्पित कीं और महिला शिक्षा जागरूकता रैली, ऐनी बेसैंट के निवास 'शान्ति कुंज' से प्रारम्भ हो कर कामाच्छा, बिर्दोपुर और सिद्धगिरिबाग क्षेत्रों के भ्रमण के पश्चात समाप्त हुयी।

कॉलेज के सेमीनार हाल में कार्यक्रम कुलगीत और ऐनीबेसैंट के प्रशंसा गीतों के साथ प्रारम्भ हुआ। प्राचार्य डा0 रचना श्रीवास्तव नें कहा कि डा0 ऐनी बेसैंट एक महान व्यक्तित्व थीं, जिन्होंनें भारत और संसार के अन्य देशों में सामाजिक और शैक्षिक सुधार का कार्य प्रारम्भ किया। विद्यार्थीगण उनकी निष्ठा और शुचिता से अपने जीवन में बहुत कुछ सीख सकते हैं। व्यवस्थापक डा0 उमा भट्टाचार्या नें डा0 बेसैंट के शिक्षा और विशेष रूप से महिला शिक्षा के संबंध में उनके भारी योगदान और उनके पं0 मदन मोहन मालवीय के साथ बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना में सहयोग को याद किया। एक छोटा सा नाटक 'चरैवेति' जिसका निर्देशन डा0 निरंजना श्रीवास्तव नें किया था, का मंचन किया गया। इसमें डा0 ऐनी बेसैंट और जे. कृष्णमूर्ति के जीवन से सम्बन्धित एक घटना का कथानक था। डा0 निरंजना श्रीवास्तव, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी, नें शिक्षा के बारे मे ऐनी बेसैंट की अवधारणा के बारे में वार्ता की।

प्रो0 मीनू पाठक, वैल्यू एडेड कोर्स ऑन 'थिऑसफी के माध्यम से सेल्फ रियलाइजेशन' के समायोजक, ने 2021–22 आयोजित गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया। विद्यार्थियों नें इस कार्यक्रम के माध्यम से प्राप्त लाभदायक परिणामों के बारे में अपनें विचार साझा किये। जिन्होंने इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा किया था उनको प्रमाणपत्र वितरित किये गये। कार्यक्रम में

कॉलेज की छात्राओं और शिक्षकों नें भाग लिया था। डा0 मंजू कुमारी नें कार्यक्रम की ऐंकरिंग की थी। डा0 निरंजना श्रीवास्तव नें धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

4. स्थापना दिवस

भारतीय सेक्शन, टी.एस. मे 17 नवम्बर 2022 को 4.30 पीएम पर 147वां स्थापना दिवस ऑन लाइन मनाया गया। मुख्य वक्ता थे – काशी तत्व सभा, वाराणसी की की बहन उमा भट्टाचार्या और गउथ्यामी लॉज काकीनाडा, आं.प्र. के बन्धु सोलोमन बाबू।

बहन उमा भट्टाचार्या नें 'मानवता के भविष्य के लिये स्थापना' विषय पर बोला। उन्होंनें अपनी वार्ता में बताया कि किस प्रकार किसी संगठन की शक्ति उसकी स्थापना पर निर्भर करती है। थिऑसफिकल सोसाइटी की प्रभवशीलता और इसका पूरे सांसार में प्रभाव दिखाता है कि इसके विशाल ढांचा की आधारशिला कितनी शक्तिशाली और कितनी गहराई में है। थिऑसफिकल सोसाइटी एक विश्व व्यापी संगठन है जो विश्वबन्धुत्व के उत्थान के लिये समर्पित है। इसके उद्देश्य का आधुनिक संसार, जो घृणा, हिंसा और आतंक के द्वारा तोड़ा जा रहा है, से बहुत प्रासंगिक है। उन्होंनें कहा कि आंतरिक संसार में परिवर्तन लानें का बहुत अधिक मूल्य है, क्योंकि वही संसार को विश्वबन्धुत्व की वास्तविक समझ तक ले जा सकता है। उन्होंने आगे कहा कि शुद्ध और जागरूक मन का भारी मूल्य है क्योंकि क्योंकि वह हमें अस्तित्व की प्रकाशित स्थिति का सर्वोच्च आशीर्वाद देता है जो मानवता को एक विकसित भविष्य तक ले जा सकता है। थिऑसफी के मोटो की व्याख्या करते हुये उन्होंनें कहा कि सत्य वह अंतिम लक्ष्य है जिसे प्राप्त करनें के लिये हमें कठिन प्रयास करते रहना चाहिये।

बन्धु सोलोमन बाबू नें 'टी.एस. सदस्यों के लिये स्थापना दिवस का महत्व' विषय पर वक्तव्य दिया। अपने वार्ता में उन्होंनें कहा कि थिऑसफिकल सोसाइटी की दो केन्द्रीय मूल्य हैं– सत्य और एकत्व। थिऑसफिकल सोसाइटी केवल मानवता के एकत्व की बात ही नहीं करती हैं, अंतिम सत्य तक पहुंचनें की इसकी विधि का भी एकत्व है। उन्होंनें कहा थिऑसफिकल सोसाइटी संसार में अकेला मंच है जो रंगहीन है और जिससे कोई जिज्ञासु किसी भी विश्वास का, संसार के किसी भाग का, आध्यात्मिक विकास के किसी सोपान से अपनी यात्रा

प्रारम्भ करके खोज कर सकता है।

बन्धु रघुराम राव, सचिव, तेलुगू फेडरेशन नें सोसाइटी के मोटो के बारे में अपने मत बताते हुये कहा कि थिऑसफिकल सोसाइटी और धर्मों के द्वारा अंतिम सत्य की शाश्वत खोज के बारे में विवेचन किया। बन्धु वी. नारायणन, कोशाध्यक्ष, भारतीय सेक्शन टीएस नें थिऑसफी के व्यवहारिक पक्ष की व्याख्या की, जिसका आशय है कि अपनी चेतना के द्वारा कौन कितना योगदान देता है। एकत्व का उद्देश्य है कि अपनी समझ को जानने से प्राप्त किया जा सकता है, पुरुष और प्रकृति को प्रतीत करे जो आत्म का द्वार है।

धन्यवाद प्रस्ताव प्रो0 सीए शिन्दे के द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंनें जीवन के एकत्व के बारे में अपने विचार प्रकट किये और वक्ताओं को इस अवसर पर अपने विचारों को प्रकट करनें के लिये धन्यवाद दिया।

अडयार दिवस

दि0 17 फरवरी 2023 को भारतीय सेक्शन द्वारा ऑन लाइन मोड पर अडयार दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ यूनीवर्सल आह्वान और स्वागत भाषण के साथ कार्यक्रम के मॉडरेटर बन्धु शिखर अग्निहोत्री नें किया। उन्होंनें इस दिवस की प्रासंगिकता के सम्बन्ध में एक लघु वार्ता भी की। उन्होंनें अडयार दिवस का संक्षिप्त इतिहास भी बताया कि कैसे इस उत्सव का नाम अडयार दिवस पड़ा और इसे मनानें की परम्परा कहां से प्रारम्भ हुयी।

सत्र के पहले वक्ता बन्धु दिव्यार्थ दुबे, एमपी एवम् राजस्थान फेडरेशन के सचिव थे। उनका विषय था 'कर्नल ऑल्काट और थिऑसफी'। उन्होंनें कर्नल ऑल्काट, थिऑसफिकल सोसाइटी के प्रथम अध्यक्ष, का संक्षिप्त जीवन परिचय दिया। उन्होंनें बुद्ध धर्म के उन्नयन और प्रसार के लिये उनके द्वारा किये गये प्रयासों और योगदान का विवेचन किया, और बताया कि उन्होंनें किस प्रकार शिक्षित भारतीयों को भारत के भविष्य के लिये कार्य करनें के लिये प्रेरित किया।

दूसरी वक्ता प्रो0 रचना श्रीवास्तव, प्राचार्य, वसन्त कन्या महाविद्यालय, वाराणसी थीं। उनका विषय था 'कृष्णमूर्ति और थिऑसफी'। उन्होंनें व्याख्या की कि कृष्णजी का थिऑसफिकल सोसाइटी के सदस्यों पर बहुत गहन प्रभाव था। उन्होंनें स्वार्थी मन के द्वारा निर्मित समस्याओं को हल करनें के लिये मानवता

को कुंजी दी जब उन्होंनें बताया कि सारी समस्याओं का हल मन को समझनें और उसे रोकनें में है जो वस्तुओं को टुकड़ों में देखता है संपूर्णता में नहीं।

तीसरे वक्ता डा0 चन्द्रप्रव भूयन, उपाध्यक्ष, आसाम फेडरेशन और भारतीय सेक्शन, टीएस की एक्जीक्यूटिव कमेटी की सदस्य हैं। उनका विषय 'सी.डब्ल्यू. लेडबीटर और थिऑसफी' था। उन्होंनें अडयार दिवस का महत्व बताया जिस दिन सी.डब्ल्यू. लेडबीटर जैसी महान आत्मा का जन्म हुआ था। उन्होंने थिऑसफी के सार – सत्य, की प्रगति में सी.डब्ल्यू. लेडबीटर की भूमिका के बारे में व्याख्या की। बन्धु शिखर अग्निहोत्री के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ, जिसमें अडयार दिवस के महत्व के बारे में एक बार फिर याद दिलाया। उन्होंनें बन्धु सी. जिनराजदास, चतुर्थ अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष को उद्धरित करते हुये कहा कि अडयार चारो ओर सहायता, प्रेरणा, और धनात्मकता का स्रोत है।

श्वेत कमल दिवस

दि0 8 मई 2023 को भारतीय सेक्शन, टीएस मुख्यालय वाराणसी के ऐनी बेसैंट हाल में श्वेत कमल दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ सर्वधर्म प्रार्थनाओं यूनीवर्सल प्रार्थना से हुआ। डा0 कुमुद राजन, अध्यक्ष, काशी तत्व सभा, नें अतिथियों का स्वागत किया। वॉइस ऑफ द साइलेंस, लाइट ऑफ एशिया और भगवद्‌गीता के अंशों का क्रमशः बहन उमा भट्‌टाचर्य, बहन भारती चट्‌टोपाध्याय और डा0 अन्नपूर्णा के द्वारा पाठ किया गया। इस अवसर पर डा0 आभा श्रीवास्तव, सदस्य काशी तत्व सभा नें 'एच.पी. ब्लैवैत्सकी और थिऑसफी' विषय पर एक वक्तव्य प्रस्तुत किया। अपनी वार्ता में उन्होंनें एचपीबी के कालातीत प्रज्ञान, निष्ठा, अतीन्द्रिय शक्तियां, खरे व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। उन्होंनें व्याख्या की कि एचपीबी नें सनातन प्रज्ञान की शिक्षायें दीं और उस प्रज्ञान तक पहुंचनें का मार्ग भी प्रकाशित किया। उन्होंनें शिक्षा दी कि व्यक्ति सामान्य कर्तव्य करते हुये भी अपने आप को संसार से कैसे अलग कर सकता है। उन्होंनें जोर दिया कि व्यक्ति जो भी जीवन चुनें उसमें अपने को पूर्णतया समर्पित कर दे और उसका स्वच्छ और खुला मन और जिज्ञापूर्ण मेधा रखना चाहिये। धन्यवाद प्रस्ताव डा0 अन्नपूर्णा, उपाध्यक्ष, काशी तत्व सभा नें प्रस्तुत किया।

4. ईस्टर थिऑसफिकल कान्फ्रेंस

99वीं ईस्टर कान्फरेंस दि0 7, 8 और 9 को टीएस के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय अडयार में सम्पन्न हुआ। कुल मिला कर 105 सदस्यों ने भाग लिया जिनमें से 38 स्थानीय और 1 यूरोपीय को सम्मिलित करके 67 बाहरी सदस्य थे। पंजीकृत सदस्यों में से कर्नाटक के 9, केरल के 6, अडयार लॉज सहित मद्रास फेडरेशन के 43, रॉयलसीमा के 18, तमिल के 9, तेलुगू के 16 और उत्कल फेडरेशन के 3 सदस्य थे। सभी सदस्यों नें ब्लैवैत्सकी बंगला के सुरम्य वातावरण में सारे सत्रों में भाग लिया। कान्फरेंस की थीम थी ''द वर्ल्ड एराउन्ड अस''। इस पुस्तक में 1980 से 2007 की अवधि में द थिऑसफिस्ट पत्रिका में राधा बर्नियर, अध्यक्ष, टी.एस. के वाच टावर स्तम्भों में प्रकाशित लेखों का बंधु सी.ए. शिन्दे के द्वारा किया गया संकलन है।

इस कान्फरेंस के सत्रों में विभिन्न फेडरेशनों से आये प्रतिभागियों की लघु वार्तायें, समूह विवेचन, भारत समाज पूजा, रिचुअल ऑफ द मिस्टिक स्टार और सांस्कृतिक संध्यायें थीं जिनमें शास्त्रीय नृत्य, वाद्य संगीत, और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे भक्ति संगीत और कठपुतली प्रदर्शन आदि सम्मिलित थे।

कान्फरेंस का प्रारम्भ बन्धु एन.सी. कृष्णा द्वारा यूनीवर्सल प्रार्थना के उच्चारण से हुआ। इसके पश्चात कान्फरेंस अधिकारी बन्धु शिखर अग्निहोत्री नें स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। प्रारम्भिक वक्तव्य टी.एस. की अंतर्राष्ट्रीय सचिव बहन मार्ता आर्तम्मा नें प्रस्तुत किया जिनके बाद प्रो0 सी.ए. शिन्दे द्वारा पुस्तक पर विहंगम दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

अन्य वक्ताओं में सम्मिलित थे – डा0 आर. रेवती, बहन एच. श्रीप्रिया, बन्धु सी.एस. नन्दकुमार, बन्धु एन. सी. कृष्णा, बहन सोनल मुरली, बन्धु आर. कृष्णमूर्ति, बन्धु के. दिनकरन, बन्धु जी सुरेश कुमार, बहन बी. सन्ध्यारानी, बन्धु के.वी. एल. कान्ता राव, बन्धु के दामोदरन, बहन एम. लक्ष्मी, डा0 पी. रवेन्द्रन, डा0 नागेश एल., बहन बी. विजय श्री, बहन एम. विजयलक्ष्मी, बन्धु पी. देवराजन, बन्धु विनय पात्री, बहन उपासिका मैत्रेय, बहन राजेश्वरी, बहन राजेश्वरी, बन्धु एस.एस. श्रीहर्ष और बन्धु वाई. श्रीनिवास मूर्ति।

वक्ताओं नें पुस्तक की निम्नांकित विषयों पर वार्तायें कीं –

थिऑसफी और थिऑसफिकल सोसाइटी, बन्धुत्व, नैतिकता, स्वतंत्रता, जीनें की कला, सच्चा ज्ञान, मन की परिपक्वता, धर्म, विज्ञान और टेक्नालॉजी, सभ्यता, अधिकार और दायित्व, विकास, महिलायें और अमानवता एवम् हिंसा। वक्ताओं नें इन विषयों को बहुत उत्साह के साथ प्रस्तुत किया और श्रोताओं में उनके प्रति बहुत रुचि उत्पन्न किया। समूह विवेचन निम्नलिखित थीम्स पर भिन्न समूह नायकों की अध्यक्षता में किया गया –

1. दंड को दूर रखना बच्चे को बिगाड़ना है . . . . . यह नैतिक है या अनुशासन है? – बहन सोनल मुरली।
2. क्या अत्यधिक धार्मिक होना एक अंधविश्वास है? – बहन बी. सन्ध्यारानी।
3. क्या शक्ति की कामना अनैतिक है? – बन्धु जी. सुरेश कुमार।
4. क्या मनोरंजन का स्वागत करना आत्म नियंत्रण के सिद्धांत के विरुद्ध है? – बन्धु एस.एस. श्रीहर्ष।

समापन सार और धन्यवाद प्रस्ताव बन्धु जय कुमार कन्नन और शांति हेतु अंतिम प्रार्थना बहन जयश्री, पुस्तकालयाध्यक्ष और टी.एस., अडयार की निवासी, नें प्रस्तुत कीं।

कान्फरेंस को ठीक ढंग से संचालित करनें में टी.एस. अडयार के सभी विभागों नें पूरी तरह से सहयोग किया।

5. भारतीय सेक्शन अध्ययन शिविर

इस वर्ष भारतीय सेक्शन का अध्ययन शिविर संचालित नहीं हुआ।

6. हिमालयन अध्ययन केन्द्र भोवाली में अध्ययन शिविर

बन्धु वी. नारायणन नें सूचित किया कि पांच फेडरेशनों नें 26 अप्रैल 2023 से 11 जून 2023 की अवधि में भोवाली में अध्ययन कैंप संचालित किये –

1) गुजरात और बाम्बे फेडरेशन, 2) कर्नाटक फेडरेशन, 3) बिहार और उत्कल फेडरेशन, 4) मराठी फेडरेशन, 5) यूपी और उत्तराखण्ड फेडरेशन एवम् एम.पी. और राजस्थान फेडरेशन। उपर्युक्त के अतिरिक्त एक ईएस शिविर भी

संचालित किया गया।

प्रतिभागियों द्वारा भोजन और अन्य सारी व्यवस्थाओं की सराहना की। अधिकांश लोगों नें पूर्णिमा रेस्टॉरेंट की सेवाओं का भी उपयोग किया। भोवाली पुस्तकालय की अधिकांश पुस्तकों को लॉजों को निःशुल्क बांट दी गयीं ताकि उनका अपेक्षाकृत अधिक उपयोग हो सके। अधिकांश लॉजों नें इस अवसर का लाभ उठा कर अपनें पुस्तकालयों को प्रशस्त किया। इसके पहले नवम्बर 2022 में वसन्त कन्या महाविद्यालय की लगभग 40 छात्रायें अध्ययन और देशाटन दौरे पर भोवाली आयीं। बन्धु वी. नारायणन नें प्रारम्भिक सत्र में उन उनके लिये उपयोगी थिऑसफिकल सिद्धांतों पर उनसे चर्चा की।

7. भारतीय सेक्शन मुख्यालय, वाराणसी में हुयी कार्यशाला और अध्ययन कार्यक्रम

भारतीय सेक्शन मुख्यालय में इस वर्ष कोई कार्यशाला या अध्ययन कार्यक्रम नहीं हुआ।

8. थिऑसफी का नये क्षेत्रों में प्रसार

बन्धु प्रदीप महापात्रा, बहन मितालिनी महापात्रा, बन्धु दुर्योधन साहू और बन्धु चित्तरंजन सत्पथी नें सचिव (कभी कभी) और उत्कल फेडरेशन अध्यक्ष और अन्य वरिश्ठ सदस्यों के साथ पुरानें लॉज को पुनर्जीवित करनें के लिये भवानीपत्ना, बालासोर, जगतसिंहपुर का 4 अक्टूबर 2022 और 6 सितम्बर 2023 को दौरा किया। जिसके परिणाम स्वरूप भवानीपत्ना लॉज में कुछ नये सदस्य भी बनें और लॉज को फिर से चार्टर मिल गया। उसके पश्चात् उन्होंनें सचिव उत्कल फेडरेशन के साथ ग्राम अलाना, पो0 बिलासुनी, जिला कटक में दि0 27.9.23 को एक नया गोपालजी थिऑसफिकल लॉज खोला। कटक लॉज के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष नें 15 अगस्त 2023 को कटक में ही एक नया लॉज खोला। उसका नाम अशोक लॉज है और अब वह बहुत क्रियाशील है।

9. भारतीय सेक्शन के अध्यक्ष के दौरे

इस वर्ष की अवधि में मेरे द्वारा अनेक ऑन लाइन व्याख्यान दिये गये, जिनमें से मुख्य थे – 'थिऑसफी और एकॉलाजी – वर्तमान संसार में रहनें के लिये व्यवहारिक प्रज्ञान ''एक रूसी समूह के लिये,'' बनारस का स्वर्णकाल –

डा0 ऐनी बेसैंट के दिन'' न्यूजीलैंड सेक्शन के लॉजों के और दो व्याख्यान व्यक्तिगत रूप से मेरे चित्रदुर्ग को दौरे के समय जब मैं कर्नाटक फेडरेशन के अधिवेशन में भाग लेने के लिये गया था।

10. राष्ट्रीय वक्ताओं के दौरे

सभी 24 राष्ट्रीय वक्ताओं के द्वारा 2022 से 2023 तक / सीधे की गयी गतिविधियों को वर्ष 2022–23 की वार्षिक रिपोर्ट (पृष्ठ 12–29) में प्रकाशित किया जा चुका है।

11. बेसैन्ट एजूकेशन फेलोशिप (बीईएफ)

वर्तमान में बीईएफ के अपने पर्यवेक्षण में दो विद्यालय संचालित हो रहे हैं – लड़कियों का इंटरमीडिएट कालेज 'वसन्त कन्या इंटर कॉलेज' और लड़कों का हायर सेकेंडरी स्कूल 'बेसैंट थिऑसफिकल स्कूल'। दोनो विद्यालय यूपी बोर्ड ऑफ एजूकेशन के अंतर्गत हैं और बहुत अच्छे परिणाम दे रहे हैं। कुल मिला कर लगभग 1300 विद्यार्थी इनमें पढ़ रहे हैं। इन शैक्षिक संस्थानों की गतिविधियां इस रिपोर्ट में अलग स्थान पर दी गयी हैं।

12. शताब्दी कान्फरेन्सेज

किसी फेडरेशन से किसी शताब्दी समारोह की सूचना नहीं मिली।

13. विजिटर्स

प्रो0 सुधीर कुमार जैन, उपकुलसचिव, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी नें भारतीय सेक्शन के अधिवेशन की अवधि में 30 अक्टूबर 2022 को 'भारतीय विश्वविद्यालय – चुनौतियां और अवसर' विषय पर एक वक्तव्य दिया।

14. सदस्यता

भरतीय सेक्शन की सदस्यता 30 सितम्बर 2023 तक 12231 जब कि 30 सितम्बर 2022 को यह संख्या 11549 थी।

इस प्रकार सदस्यता की संख्या में यह बढ़त 682 सदस्यों की है जो कि पिछले वर्ष 2268 सदस्यों से कम हुयी थी। इस उपलब्धि का मुख्य कारण यह था कि इस वर्ष सेक्शन में 2804 नये सदस्य बनें हैं, जिनमें से अधिकांश युवा हैं।

जो सदस्य शांति लीन हुये हैं उनकी संख्या 284 है जब कि पिछले वर्ष यह संख्या 25 थी।

इस वर्ष 16 फेडरेशनों, केन्द्रों और मुख्यालय के अनअटैच्ड कुल 528 लॉज हैं जब कि यह संख्या पिछले वर्ष 502 थी।

इस वर्ष 2804 नये सदस्य जुड़े हैं जब कि पिछले वर्श यह संख्या 2258 थी। इसका श्रेय प्रवेश शुल्क और वार्षिक शुल्क के समाप्त होने को जाता है और कालेज में थिऑसफी के बहुत अधिक प्रसार को जाता है।

फेडरेशनों और लॉजों के द्वारा अधिकतम प्रयास किया गया है कि सदस्य गण अपनी सदस्यता प्रत्यक वर्ष 1 जून और 31 अगस्त के मध्य अपने हस्ताक्षर के साथ नवीनीकृत करवा लें। उन्हें फार्म को ईमेल "renewalindsecmem@gmail.com" पर करवा लें। अगले वर्ष से इसमें कोई समझौता नहीं होगा और यदि उन्हें अपनी सदस्यता जारी रखनी है तो प्रत्येक सदस्य को चाहे वह जिस पद पर हो, यह करना होगा।

15. इंडियन थिऑसफिस्ट और भारतीय सेक्शन की वेब साइट

क. इंडियन थिऑफसफिस्ट

हमारी मासिक पत्रिका नियमित रूप से सारे 12 महीनें हिन्दी और अंग्रेजी में प्रकाशित होती रही है। इस पत्रिका की विषय वस्तु सदा मूल्यवान रही है। यह भी ध्यान रखा गया है कि अक्षरों का आकार ऐसा हो जिसे आसानी से पढ़ा जा सके और मुखपृष्ठ को अन्यान्य महीनों में अलग अलग रंगों में छाप कर आकर्शक बनाया गया है। यह ध्यान देनें की बात है कि सदस्यों के चुनाव के अनुसार हिन्दी या अंग्रेजी में यह पत्रिका निःशुल्क भेजी जाती है। मैं बन्धु एस. सुन्दरम, पूर्व महासचिव, भारतीय सेक्शन टीएस के प्रति अंग्रेजी संस्करण के लिये ओर श्री एस.एस गौतम, राष्ट्रीय वक्ता को समय सीमा के अन्तर्गत प्रत्येक महीनें अनुवाद करनें के लिये कृतज्ञ हूं।

ख. भरतीय सेक्शन की वेबसाइट

भारतीय सेक्शन की वेबसाइट "www.theosophyindia.org" है। भारतीय सेक्शन के अनेक फेडरेशन अपनी पत्रिकायें इसमें लोड करते हैं, जो लोगों के पढ़नें के लिये उपलब्ध रहती हैं। इसमें भारतीय सेक्शन के बारे में

बहुत सूचनायें हैं और वक्ताओं और विषयों के नाम और तिथियों के साथ आगामी ऑनलाइन और ऑफलाइन कार्यक्रमों की सूची रहती है। सम्बन्धित वर्ष के लिये वेबसाइट के प्रयोग के सम्बन्ध में सूचनायें निम्नवत हैं —

क्र.सं.	विवरण	2020—21	2021—2022	2023—23
1.	पूरे नये प्रयोगकर्ता	5836	6832	5970
2.	पूरे विजिटर्स की संख्या	5905	5892	6033
3.	पूरे सत्रों की संख्या	7641	7533	7721
4.	सत्र प्रयोकर्ताओं का अनुपात	1.30	1.28	1.28
5.	पूरे पेज दर्शक	20.938	19.028	21.124
6.	पेज सत्रों का अनुपात	2.74	2.53	2.74
7.	औसत सत्र अवधि	1.46 मि0	1.43 मि0	1.45 मि0
8.	बाउंस दर	48 प्रतिशत	49.93 प्रतिशत	48.8 प्रतिशत
9.	भारत के प्रयोगकर्ता	57 प्रतिशत	61.39 प्रतिशत	63.26 प्रतिशत
10.	नये विजिटर्स	15 प्रतिशत	13.30 प्रतिशत	12.2 प्रतिशत

भातीय सेक्शन थिऑसफी के प्रचार प्रसार के लिये सोशल मीडिया में भी सम्मिलित हुआ है, जिसका नाम है THEOSOPHY INDIA

[1] YOU TUBE: https://www.youtube.com/channel/UCmghC_GjlOGKHR90TcD6peQ

[2]FACEBOOK: https://www.facebook.com/profile.php?id=100081315351270&mibextid=ZbWKwL

[3]INSTAGRAM https://instagram.com/theosophyindia?igshid=ZDdkNTZiNTM=

4, इनके अतिरिक्त सेक्शन नें दि0 8.5.2023 को एक त्रैमासिक ई न्यूजलेटर 'इंसाइट' प्रारम्भ किया है। इसके मुख्य सम्पादक बन्धु प्रदीप एच. गोहिल, अध्यक्ष भारतीय सेक्शन हैं। सम्पादक बहन सुव्रलीना मोहन्ती और सह

सम्पादक बन्धु आदि केशव हैं।

1. थिऑसफिकल ऑर्डर ऑफ सर्विस

टी.ओ.एस. की गतिविधियां जहां तक राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और समूह स्तर पर इस वर्ष में जीव मात्र के कष्टों के निवारण पर फोकस के साथ क्रियाशील योगदान का सम्बन्ध है, वे इस प्रकार रही हैं। दि0 27 अक्टूबर को नेशनल कमेटी की रिपार्टों और लेखा के पुनर्वेक्षण के लिये वाराणसी में एक्जीक्यूटिव कमेटी की बैठक हुयी। महिलाओं का सशक्तीकरण लगातार टीओएस की केन्द्रीय थीम रही है। दि0 30 अक्टूबर 2022 को वाराणसी में वार्षिक सामान्य सभा सम्पन्न हुयी जिसमें उड़ीसा क्षेत्र में नये स्वयं सेवी सदस्यों को शिक्षा, स्वास्थ्य, आपदा राहत, न्याय, पर्यावरण, बुढ़ापा, महिला सशक्तीकरण, कौशल विकास आदि क्षेत्रों में सेवाओं का आनन्द प्राप्त करनें का अवसर देनें को संवेग देने के लिये यूथ फोरम के निर्माण पर डा0 दीपा पाधी नें जोर दिया।

इस वर्ष का महत्वपूर्ण कार्यक्रम था डा0 ऐनी बेसैंट का 175वां जन्म दिवस, जिस पर अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय, अडयार चेन्नै में दि0 8 और 9 जुलाई 2023 को एक राष्ट्रीय कान्फरेंस का आयोजन किया गया। इसके पहले डा0 के. शिवप्रसाद, राष्ट्रीय निदेशक, टीओएस इन इंण्डिया नें टीएस मुख्यालय में लगभग 10 दिन तक अडयार लाइब्रेरी में डा0 बेसैंट के गहनतर आयामों पर अनुसंधान के लिये सूचनायें एकत्रित कीं। वर्ष 1908 में इसकी स्थापना से उनका पुराना जीवन परिचय, पत्रक, वार्षिक प्रतिवेदन और पत्रों को एकत्रित करके उन्होंनें सावेनियर 2023 के रूप में प्रकाशित किया। उसकी विषयवस्तु संकेत करती है कि उस काल के कार्यकर्ताओं के द्वारा उन परिस्थितियों में बहुत समर्पित प्रयास किये गये थे। ओल्ड लीव्स के बाद का बहुत इतिहास है जो नयी पीढ़ी को बन्धुत्व के बारे में प्रेरित करेगी। इस पुस्तक की 500 प्रतियां छापी गयीं थीं, प्रत्येक पुस्तक में 250 पृष्ठ थे, जिन्हें सारे प्रतिभागियों नें साझा किया, और शेष प्रतियां भविष्य की बैठकों में वितरित करनें के लिये सुरक्षित हैं। ऐनी बेसैंट के बहुआयामी व्यक्तित्व को प्रसिद्ध वक्ताओं को अडयार परिसर में सुनना एक महान अनुभव था। डा0 बेसैंट एक मानवतावादी, समाज सुधारक, मानवीय अधिकारों और पशुओं के अधिकारों की पक्षधर, स्वतंत्रता सेनानी, क्रान्तिकारी, न्याय के लिये संघर्षरत, त्याग, महिला सशक्तीकरण, करुणा, गरीबों की सेवा और सभी जीवों के कष्ट कम करना आदि अनेकों दसियों तक उनके जीवन की

शिक्षायें हैं। इस कॉन्फरेंस में 80 प्रतिभागियों नें भाग लिया और उन्होंने अपने अनुभव साझा किये। बहन नैन्सी सीक्रेस्ट नें डा0 बेसेंट की समाज सेवा और टी. ओ.एस. से सम्बन्धित गतिविधियों का पुनरावेक्षण किया और विभिन्न उपलब्धियों को स्पर्श किया।

दि0 9 जुलाई को टीओएस इन इंडिया नें अडयार में वार्षिक सामान्य सभा सम्पन्न की, जिसमें नेशनल कॉन्फरेंस में भाग ले रहे भारत के विभिन्न भागों से आये सभी सदस्य सम्मिलित हुये। सामाजिक परिवेश और समस्याओं को देखते हुये, यह निर्णय लिया गया कि महिला सशक्तीकरण भविष्य के लिये टीओएस का मुख्य विचार बिन्दु (थीम) और केन्द्रीय लक्ष्य बनाया जाये। इसके पश्चात सदस्यों से टीओएस की नीतियों में अन्य किसी परिवर्तन या नये कार्यक्षेत्र के बारे में सुझाव प्रस्तुत करनें के लिये आमंत्रित किया गया। भविष्य में भी यदि कोई विचार बने तो राष्ट्रीय सचिव को सूचित करनें को कहा गया ताकि वे उसे सभी क्षेत्रों और समूहों में लागू कर सकें। सभी सदस्यों से वेबसाइट indiatos@org प्रयोग और उसको संवर्धित करनें और अभावग्रस्त लोगों तक पहुंचनें के लिये आग्रह किया गया।

इस वर्ष की अवधि में सीरिया और टर्की में भूकम्प पीड़ितों के लिये सहयोग के लिये टीओएस भारत नें अपील की थी जिस पर अच्छी प्रतिक्रिया हुयी। एकत्रित किया हुआ रु 140600/– विशेष रूप से यूनाइटेड नेशन्स को सीरिया और टर्की में राहत कार्यों में लगानें के लिये भेज दिया गया। भारतीय टीओएस सभी समूह सदस्यों को जिन्होंनें इस उद्देश्य के लिये दान राशि दी है, को उनके इस आपदा में बन्धुवत सहयोग के लिये धन्यवाद दिया।

दि0 1 अक्टूबर 2022 से 30 सितम्बर 2023 तक टीओएस के 103 नये सदस्य बनें, जिसमें 82 आजीवन सदस्य और 21 संरक्षक थे और 1 नया समूह स्थापित किया गया।

विभिन्न टीओएस समूहों द्वारा क्षेत्रीय बैठकें हुयीं जिनमें उनकी गतिविधियां और भविष्य के हस्तक्षेपों पर चिन्तन हुआ। हमारे अत्यधिक प्रयासों के बाद भी कुछ क्षेत्र जैसे छत्तीसगढ़, हरयाना, जम्मू–कश्मीर में अभी भी कोई गतिविधि प्रारम्भ नहीं हो सकी है जिन्हें पुनर्जीवित करना होगा। अन्य क्षेत्र पूरे विश्वास, लगन और सारे सदस्यों के सहयोग से सामान्य गतिविधियों में नियमित रूप से अच्छा कार्य कर रहे हैं।

करोना महामरी की स्थिति में सुधार होनें के कारण अब यात्रायें सम्भव हो गयी हैं अतः पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में क्षेत्रीय अधिवेशनों की पूर्व परम्परा को पुनः प्रारम्भ किया जा सकता है। आपसी सीख और अनुभवों को साझा करने के लिये यह आपसी सम्मिलन आवश्यक है।

इस वर्ष की अवधि में रु 90000/– लार्सन ऐण्ड ट्यूब्रो तथा इन्फो विजन कार्पोरेट से टीओएस उड़ीसा को कार्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी अभिदान प्राप्त हुआ था। सभी क्षेत्रीय टीओएस क्षेत्रों को सलाह दी जाती है कि सामाजिक विकास फंड के लिये कॉर्पोरेट निकायों से सम्बन्ध स्थापित करें ताकि हम कष्ट पीड़ितों और शोशित वर्ग को राहत दे सके। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवायें अधिकांश समूहों के प्राथमिकता के कार्यक्षेत्र हैं, क्योंकि सरकारी सहायता संवेदनशील और शोशित वर्गों तक नहीं पहुंच पा रही है।

2. भारतीय सेक्शन द्वारा संचालित कॉलेज और हॉस्टेल

इस वर्ष के चार कॉलेजों और स्कूलों की गतिविधियां भारतीय सेक्शन की वार्षिक रिपोर्ट (2022–23) में प्रकाशित की जा चुकी हैं। (कृपया रिपोर्ट के पृष्ठ सं0 33–43 पर देखें)

वसन्त बालिका विहार हॉस्टेल जिसकी व्यवस्था भारतीय सेक्शन करता है, वसन्त कन्या महाविद्यालय की छात्राओं को उपलब्ध कराता है। इस छात्रावास की मांग बहुत अधिक है क्योंकि नगर के हृदय में स्थित यह विद्यालय विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है जो कॉलेज से निकटता की खोज में रहती हैं। होस्टल उन महिला विद्यार्थियों को, जो अपने अध्ययन को वाराणसी में रह कर पूर्ण करनें की आवश्यकता की पूर्ति करता है जिनके निवास स्थान निकट नहीं हैं। इस सुविधा में 9 भवन हैं। निम्नलिखित तालिका इस वर्ष की अवधि में विभिन्न भवनों के उपयोग की स्थिति दर्शाती है –

भवन का नाम	सीटों की कुल संख्या
आनन्द भवन	45
विनय भवन	12
शान्ति भवन	15
मैत्रेय भवन	27
ब्लैवैत्सकी भवन	36

दामोदर भवन	08
ध्रुव भवन	06
भोजनशाला भवन	20
रोहित मेहता भवन	146
कुल योग	**315**

कॉलेज में लगभग 2200 विद्यार्थियों का पंजीकरण है। उनमें से अधिकांश बाहरी स्थानों से हैं। इसलिये हॉस्टेल प्रवास की प्रचुर मांग है। होस्टल उन्हें सिंगल बेड रूम, ट्विन बेड रूम, और डॉर्मिटरीज प्रस्तुत करता है जिनमें 3 से 12 तक बेड उपलब्ध हैं। वर्तमान में 202 सीटें इस सत्र के विद्यार्थियों के द्वारा प्रयोग की जा रही हैं और आने वाले सत्र में हम 113 सीटें नवागन्तुकों को उपलब्ध करायेंगे। उपर्युक्त भवनों के अतिरिक्त अब श्रीराम भवन भी 20 छात्राओं को प्रवास उपलब्ध करायेगा। देर से हुये प्रवेश और परिसर के हॉस्टेलों की अधिक मांग के कारण दामोदर हाउस की 6 छात्रायें और ध्रुव भवन की 6 छात्रायें श्रीराम भवन के नवीनीकरण के बाद उसमें शिफ्ट हो जायेंगी।

वसन्त बालिका विहार में दो मेसों की सुविधायें हैं – मैत्रेय मेस और श्रीदेवी मेहता मेस। ये मेसें विद्यार्थियों को शुद्ध दूध और ताजे फलों के साथ पोशक और स्वच्छ आहार, प्रदान करती हैं।

3. भारतीय सेक्शन की वित्तीय स्थिति

भारतीय सेक्शन की वित्तीय स्थिति का रुझान प्रगतिशील है। जब कि पिछले वर्ष सरप्लस फंड रु. 2,00,53,540/– था, और वर्तमान वर्ष 2022–23 में यह रु. 2,57,57,617.05 रिपोर्ट हुआ है। यह नोट किया जाना चाहिये कि भारतीय सेक्शन के वार्षिक अधिवेशन का खर्च रु 12,08,857/– आया है और रु 10,74,741/– प्रसार प्रचार के लिये फेडरेशनों और लॉजों को दिया गया है। सेक्शन नें 1,57,05,636/– शैक्षिक संस्थानों और हॉस्टेल से प्राप्त हुआ। पिछले वर्ष की कोशाध्यक्ष की रिपोर्ट में उन्होंनें चर्चा की है कि सम्भवतः यूपी सरकार द्वारा 'रोप वे' योजना के लिये परिसर के कुछ भाग का अधिग्रहण कर लिया जाये। यद्यपि भूमि का अधिग्रहण वर्तमान वित्त वर्ष में हो चुका है फिर भी उसका यहां जिक्र करना उचित न होगा।

4. केन्द्रीय सम्पत्ति कमेटी की रिपोर्ट

जैसा कि हमारी पिछले वर्ष की रिपोर्ट में दिया था, निम्नलिखित भारतीय सेक्शन की सम्पत्तियां आगे के कार्य के लिये ली गयी हैं –

1) भारतीय सेक्शन की चित्तूर की सम्पत्ति – चित्तूर में कोई क्रियाशील लॉज नहीं है, और भवन की छत गिर गयी है। और परिसर का भी एन्टीसोशल तत्वों के द्वारा दुरुपयोग हो रहा है। केन्द्रीय सम्पत्ति कमेटी नें सारे मालिकाना अभिलेख एकत्रित किये हैं और एक वकील को दे दिया है। उस सम्पत्ति के प्रति कोई दायित्व और अधिभार नहीं है।

2) भारतीय सेक्शन की राजामहेन्द्रपुरम् की सम्पत्ति – वहां की स्थानीय कोर्ट में एक अवैधानिक निवासी को निकालनें के लिये प्रार्थना की गयी है। प्रकरण अभी भी कोर्ट में लम्बित है।

3) भारतीय सेक्शन की कृश्णगिरि की सम्पत्ति –

सम्पत्ति के दो पावर ऑफ एटॉर्नी होल्डर्स वर्तमान समय में क्रियाशील नहीं हैं। बन्धु हरिहर राघवन शांतिलीन हो चुके हैं और बन्धु एम.वी. रेंगराजन को उनके स्वास्थ्य कारणों से मुक्त किया जाना है। नये पावर ऑफ एटार्नी होल्डर्स नियुक्त किये जाने हैं।

4) भारतीय सेक्शन की ट्रिप्लीकेन, चेन्नै की सम्पत्ति –

लॉज वर्तमान में क्रियाशील नहीं है और सम्पत्ति अनधिकृत रूप से अराजक तत्वों के द्वारा प्रयोग की जा रही है। प्रकरण सेक्शन के द्वारा तुरंत उचित कार्यवाही के लिये विचार कर रहा है।

20. शांतिलीन –

अडयार लॉज के बन्धु एस. हरिहर राघवन (डिप्लोमा संख्या 43201) दि0 18 जून 2023 (रविवार) को 7.15 एएम पर शांतिलीन हुए। वे भारतीय सेक्शन, टीएस की राष्ट्रीय एक्जीक्यूटिव काउन्सिल के सदस्य थे और कुछ वर्षों से इंडियन काउन्सिल के सदस्य भी थे। इसके अतिरिक्त वे थिऑसफिकल सोसाइटी के अंतर्राष्टीय मुख्यालय में भी कुछ दायित्व साझा करते थे।

बन्धु अमुभाई रावल, मध्य एवम् पूर्वी अफ्रीका सेक्शन, टी.एस. के एक

दिग्गज थिऑसफिस्ट थे, जब मुम्बई के प्रवास पर थे तब उन्होंनें ब्लैवैत्सकी लॉज की सदस्यता ग्रहण कर रखी थी। बहन दीपा कपूर नें हमें उनके शाश्वत प्रकाश में चले जानें के बारे में सूचित किया है। यद्यपि वे लंदन में रहते थे फिर भी वे ब्लैवैत्सकी लॉज की गतिविधियों के बारे में संपर्क में रहते थे। जब उन्होंनें ब्लैवैत्सकी लॉज के सेवक गनपत की बीमारी और उन्हें चिकित्सीय सहायता की आवश्यकता के बारे में सुना तो बन्धु अमुभाई रावल नें उसकी चिकित्सा के लिये अपने किसी सम्बन्धी के माध्यम से धन भेजा। उनकी आत्मा शाश्वत शांति को प्राप्त करे और टी.एस. के बन्धुओं को उच्च लोकों से प्रेरित करती रहे!

बहन सूनू वेसूना, सदस्य शांति लॉज, दि0 17 अप्रैल 2023 को शाश्वत प्रकाश को प्राप्त हुयीं। यूनिटी यूथ लॉज को जीवित रखनें में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा है। वे अपने विद्यार्थियों को यूनिटी यूथ लॉज से जुड़नें के लिये और बॉम्बे थिऑसफिकल फेडरेशन की गतिविधियों में भाग लेनें के लिये प्रेरित किया करती थीं। वे विद्यार्थियों को 'रिचुअल ऑफ द मिस्टिक स्टार' में भी भाग लेनें के लिये प्रेरित करती थीं। वे चाहती थीं कि गरीब विद्याथियों में थिऑसफिकल मूल्य आनें चाहिये, इसलिये वे उनकी सदस्यता शुल्क स्वयं देती थीं। बहन मेहरंगीज बारिया लिखती हैं कि बहन सूनू आसपास के अनेक गरीब बच्चों को, उनकी आर्थिक सीमाओं के होते हुये भी अपने घर में निःशुल्क पढ़ाती थीं। इस दयापूर्ण और ध्यान रखनें वाले हृदय की समर्पित शिक्षक को शांति का आशीर्वाद प्राप्त हो!

प्रिय बन्धु परिनाज गांधी को बहन परिनाज गांधी, सचिव, टीओएस, मुम्बई क्षेत्र की श्रद्धांजलि प्रेषित करते हुये प्रार्थना करती हैं कि वे प्रकाश स्तंभ और कुछ के लिये प्रेरक हो जायें! बन्धु परवेज गांधी दि0 28 मार्च 2023 को 66 वर्ष की आयु में शाश्वत प्रकाश को प्राप्त हुये। थिऑसफिकल आदर्शों से प्रभावित हो कर एक कोमल आयु से बन्धु परवेज नें लोटस सर्किल और राउण्ड टेबल में एक स्कूल ब्वॉय के रूप में प्रवेश किया। वर्ष 1973 में अंतर्राष्ट्रीय कन्वेंशन में भाग लेनें के बाद, उन्होंनें थिऑसफिकल सोसाइटी में प्रवेश किया। उनके यूनिटी लॉज के साथ सम्बन्धित रहनें के काल में, उन्होंनें अध्यक्ष सहित अनेक पदों पर कार्य किया उसके पश्चात उनकी सदस्यता ब्लैवैत्सकी लॉज को स्थानांतरित हुयी जहां वे स्तब्ध किन्तु समर्पित आजीवन सदस्य रहे। तभी उनकी व्यवसायिक कमिटमेंट नें गोदरेज ऐण्ड बॉयसी मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी के

मुख्य वित्तीय अधिकारी के रूप में देखा।

वे क्रियाशीलता से जीवित रहे और 48 वर्षों तक थिऑसफी के सिद्धांतों को अभ्यास में लाते रहे। टी.ओ.एस. मुम्बई क्षेत्र में वे मार्गदर्शक प्रकाश और प्रधान समाजसेवी रहे। वे निस्वार्थ सेवा, नम्रता, दयालुता, दानवीरता के प्रतीक रहे और उनके अनगिनत दयायुक्त प्रेम के कार्यों और उनकी मुख में सदा प्रसन्नता के भाव के लिये वे सदा याद किये जायेंगे।

वे उसी प्रकार राउण्ड टेबल आन्दोलन के उन्नयन के लिये तत्पर रहते थे और प्रायः चीफ नाइट के रूप में ऑफीसिएट करते थे। उनकी अंतिम सहभागिता दिसम्बर 2022 के क्रिसमस उत्सव के दिन हुआ था। उसके पश्चात वे बैठकों में आने में असमर्थ हो गये और कैंसर उनके भौतिक शरीर को पीड़ित करता रहा। फरवरी में उन्होंनें लिखा था कि ''वर्चुअली बैठकों में आते रहेंगे!''

हम सदा अनुग्रहीत करनें वाली आत्मा की उच्चतर अदृश्य लोकों में और अधिक प्रगति की कामना करते हैं।

आनन्द लॉज प्रयागराज के बन्धु शिव कुमार श्रीवास्तव (डिप्लोमा सं0 64423) दि0 16 अप्रैल 2023 को शांतिलीन हुये। दि0 23 अप्रैल 2023 को आनन्द लॉज में उन्हें श्रद्धांजलि देनें के लिये एक विशेष बैठक आयोजित की गयी।

काशी तत्व सभा के बन्धु श्रीप्रकाश गुप्ता (डिप्लोमा सं0 70572) दि0 18 अप्रैल 2023 को शांति लीन हुये।

6. आगे के कार्यक्रम

वर्तमान समय में सबसे महत्वपूर्ण कार्य है कि सब डिवीजनल मजिस्ट्रेट की कोर्ट में सदर तहसील, वाराणसी कार्यालय के अभिलेखों में भूमि को उपेन्द्रनाथ बासु के नाम से भारतीय सेक्शन, थिऑसफिकल सोसाइटी, वाराणसी के नाम दाखिल खारिज करवाना। हमारी टीम के द्वारा नियमित रूप से कोर्ट में निर्धारित तिथियों को उपस्थित होना और पैरवी करना। उतना ही महत्वपूर्ण दो क्रिमिनल केसों से मुक्त होना भी है, जो वाराणसी कोर्ट में मुझ पर झूठे केस लगाये गये हैं।

हमें रिट पेटीशन को ठीक से फालो करना होगा जो हमनें इलाहाबाद

हाई कोर्ट में वाराणसी विकास प्राधिकरण के द्वारा गुरुबाग रोड को चौड़ा करनें के लिये जो 10,586 वर्ग फुट भूमि अधिग्रहीत की है, उसकी क्षतिपूर्ति के लिये दायर की है।

वी.के.एम. के नये भवन में कामर्स, शिक्षा (बीएड) और मैनेजमेंट संकाय (बीबीए और एमबीए) प्रारम्भ किये जाने हैं।

वाराणसी विकास प्राधिकरण से रोहित मेहता हॉस्टेल भवन, हार्मोनी भवन और कॉलेज भवन के निर्माण की वैधानिक अनुमति प्राप्त करनें के लिये फालो अप करना होगा।

7. आभार

प्रत्येक वर्ष हम इस सेक्शन को बन्धु वी. नारायणन को उनके द्वारा पूरे वर्ष मेरे कार्यों में प्रदत्त महान सहायता के लिये धन्यवाद से प्रारम्भ करते हैं। यह वर्ष उनसे अलग नहीं है। वे बहुत कोआपरेटिव धनात्मक व्यक्ति हैं। उनके साथ कार्य करना बहुत आसान हो जाता है।

मुझे बन्धु एस.एल. दर को उनके द्वारा परिसर के प्रशासन और भारतीय सेक्शन और मेरे प्रति चल रहे केसों को कोर्ट में फालो करके दी गयी महान सहायता के लिये धन्यवाद देता हूं। इसी प्रकार मैं बहन उमा भट्टाचार्य को हॉस्टेल और वीकेएम कॉलेज की व्यवस्था करनें के लिये धन्यवाद देता हूं। उन्होंनें कॉलेज की छात्राओं को थिऑसफिकल सोसाइटी की सदस्यता लेने के लिये प्रेरित किया है।

मैं बहुत विश्वसनीय बन्धु एस. सुन्दरम को उनके द्वारा द इण्डियन थिऑसफिस्ट के प्रकाशन में सहायता के लिये धन्यवाद देता हूं।

बन्धु प्रदीप महापात्रा के द्वारा भारतीय सेक्शन के लिये अनेक कार्यक्रम आयोजित करके थिऑसफिकल कार्य के प्रसार का असाधारण कार्य किया गया है। उनके प्रति मेरी गहन कृतज्ञता के भाव हैं। उन्होंनें अनेक लोगों को व्यस्त रखा है और स्तब्धता से अनेक युवा थिऑसफिस्टों को प्रेरित किया है। वे कार्यक्रम समिति से भी संयुक्त रहे हैं।

मैं श्री ओम्प्रकाश के प्रति अपना आभार व्यक्त करनें के लिये शब्द नहीं खोज पा रहा हूं, जिन्होंनें मेरे कार्यालय के कार्यों को सम्पन्न करनें में दिन और

समय का ध्यान दिये बिना मेरी सहायता की है। इस बार उन्होंनें नवीनीकृत हुये सदस्यों की व्यक्तिगत सूचनाओं की प्रविष्टि करके बहुत पूर्णता से कार्य किया है। मैं श्री ए.एन. सिंह को उनके बहुत शुद्ध लेखा कार्य के लिये धन्यवाद देता हूं। श्री अतुल कुमार सिंह को अनेक प्रशासनिक दायित्वों को सम्पादित करनें के लिये धन्यवाद देता हूं। मैं मधु जी को मेरे वाराणसी के प्रवास के समय मेरे व्यवसाय का ध्यान रखनें के लिये आभारी हूं। मैं अदम्य और अनुभवी श्री राजकुमार पाण्डेय को धन्यवाद देता हूं जो मेरे द्वारा दिये गये अनेक कार्य करते हैं। मैं राजू और उनकी पत्नी को शांति कुंज को स्वच्छ रखनें के लिये धन्यवाद देता हूं। मैं सन्तोष यादव, छुन्ना, सोमनाथ मौर्य, श्री झा और सिक्योरिटी डिपार्टमेंट के इलाका को उनके निष्ठापूर्ण कार्यों के लिये धन्यवाद देता हूं।

इस टीम के साथ कार्य करके मैं प्रसन्नता और विशेषाधिकार प्रतीत करता हूं।

दि0 28.10.2023 — प्रदीप एच. गोहिल

स्थान – वाराणसी — अध्यक्ष भारतीय सेक्शन

समाचार और टिप्पणियां

100वीं ईस्टर कॉन्फरेंस – 2024

100 वीं ईस्टर कॉन्फरेंस अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय अडयार, चेन्नै में 29 से 31 मार्च 2024 की अवधि में आयोजित की जा रही है।

कॉन्फरेंस की थीम होगी ***''द पाथ टू परफेक्शन (पूर्णता का मार्ग)''***

थिऑसफिकल सोसाइटी (टी.एस.) के सदस्य जो गुड स्टैंडिंग में हैं, उनका प्रतिभागी के रूप में इसमें भाग लेने के लिये स्वागत है। उनसे निम्नलिखित सन्दर्भ ग्रन्थों को पढ़नें की प्रार्थना की जाती है –

1. ऐट द फीट ऑफ द मास्टर – एल्कियानी
2. वाइस ऑफ द साइलेंस – एच.पी. ब्लैवैत्सकी
3. लाइट ऑन द पाथ – मेबेल्स कॉलिन्स
4. मास्टर्स ऐन्ड पाथ – सी.डब्ल्यू. लेडबीटर
5. फ्रीडम फ्रॉम नोन – जे. कृष्णमूर्ति।

पंजीकरण दि0 15 जनवरी 2024 को प्रारम्भ होगा। पंजीकरण लिंक 15 जनवरी 2024 के 9.00 एएम पर क्रियाशील की जायेगी।

कैन्सीलेशन की अंतिम तिथि 15 मार्च 2024 होगी। (उसके बाद के कैंसीलेशनों पर कोई रिफंड देय नहीं होगा।)

कैंसीलेशन – यदि रिफंड 15 मार्च 2024 तक होगा तो रु. 300/– काट कर बाकी धनराशि रिफंड कर दी जायेगी। 15 मार्च के बाद के कैंसीलेशन पर कोई धनराशि रिफंड नहीं की जायेगी।

- पंजीरण की अंतिम तिथि 7 मार्च 2024.
- भूमि तल पर ठहरनें का स्थान सीमित है।
- केवल सदस्यों को ही ठहरनें का स्थान दिया जायेगा।
- किसी पूछ ताछ के लिये कृपया कॉन्फरेंस आफीसर बन्धु शिखर अग्निहोत्री को easterconferenceis@gmail.com पर ईमेल करें या 884026268 पर ह्वाट्सऐप से सम्पर्क करें।

ईस्टर कांफरेंस में पंजीकरण के लिये पैकेज

पैकेज 28 मार्च के रात्रि के भोजन से प्रारम्भ होगा और और 1 अप्रैल को प्रातः कालीन जलपान तक चलेगा। मानक दरें निम्नलिखित हैं –

क. लेडबीटर्स चैम्बर्स में एयर कन्डीशनिंग के साथ रु. 4400/– प्रति व्यक्ति (जिसमें रजिस्ट्रेशन शुल्क, ठहरने की सुविधा और भोजन सम्मिलित है।)

ख. लेडबीटर्य चैम्बर बिना एयर कन्डीशनिंग के साथ रु. 3500/– प्रति व्यक्ति (इसमें पंजीकरण शुल्क, ठहरने की सुविधा और भोजन सम्मिलित है।)

ग. न्यू क्वार्डेंगल एकॉमोडेशन में रु. 2600/– (इसमें पंजीकरण शुल्क, न्यू क्वार्डेंगल में ठहरने की सुविधा और भोजन सम्मिलित है।)

घ. केवल भाग लेनें के लिये पंजीकरण रु. 300/– प्रति व्यक्ति। (इसमें केवल कार्यक्रम में भाग लेनें के लिये पंजीकरण बिना ठहरनें की व्यवस्था या प्रीपेड भोजन के है। भोजन कार्यक्रम के स्थान पर किचेन को पूर्व सूचना दे कर लाया जा सकता है।)

यदि ऑनलाइन भुगतान करनें में समस्या आ रही है तो हमे निम्नलिखित ईमेल पर संपर्क करें।

tresury.hq@ts-adyar.org

एलॉटमेंट

ठहरनें के स्थान के बारे में कान्फरेंस कमेटी द्वारा मार्च 2024 के तीसरे सप्ताह में निर्णय लिया जायेगा।

पंजीकरण प्रकिया

पूरी रजिस्ट्रेशन और भुगतान प्रक्रिया ऑन लाइन है। भुगतान और पंजीकरण के लिये लिंक निम्नवत है –

फॉर्म केवल एक बार में एक प्रतिभागी के लिये भरा जायेगा। अतः यदि आप परिवार या किसी समूह के साथ रहना चाहते हो तो फॉर्म की 'स्पेशल रिक्वेस्ट' फील्ड में परिवार सदस्यों या समूह के सदस्यों के नाम लिखना न भूलें। इसके अतिरिक्त उनके सब के लिये अलग अलग रजिस्ट्रेशन फॉर्म भी भरें।

लिंक 15 जनवरी 2024 को 9.00 एएम पर क्रियाशील की जायेगी। रजिस्ट्रेशन /भुगतान लिंक है – http://rzp.io/1/h2fmEfAqvN